1376 मि.

परमगुरवे ॥नचेक॰ जो षेचरग्रहेन थाया पामो चक्रू नतेक॰ स्पष्टग्रहै या प्या किसेकामें:
नमः॥ कहूंला कडला

॥ दे० ॥ नचेत्खेचराः स्थापिताः किं च चक्रे। नते स्पष्टगाः स्थापितौ किं
॥अलाक॰ लावसंधि विना किधा नो कि सेकामे ॥फलेक॰ फलफल फलेकरी सर्वग्रहनो फल
कहस्युं
ग्रहेंद्रै। अला वादितः स्पष्टताको न हेतुः फलैरेव सर्वं ब्रुवेतानितस्मात्
१ ॥तनुक॰ तनतवनइ सूर्यहोय तो शरीर स्थूल होय ॥मनः क॰ स्त्रीघी मन संताप पामइ: तथा ॥वक्त्रः पीम्
गोली घी
॥२॥ तनुस्थोरविस्तुंगदृष्टिं विधत्ते। मनः संतपेद्दारदायादी वर्गाति। वक्तुः पी
तेक॰ वातपीत्तें करी शरीर पीडा ॥सवैक॰ तेनिह चइं फिर तो हानि दृष्टि पामइ २ ॥धनेक॰ सूर्यधन तुवनेसूर्य
पामै विलें
त्यते वातपीत्तेन नित्यं। सर्वै पर्यटं दृक्पास दृष्टिं प्रयाति ॥२॥ धनेयस्य स्यात्तदुः
होय तो सोलागी अधीको ॥चतुः पदक॰ चउपदें करी होयें तलेमागें धनष ॥क्रियाक॰ कष्टदेनें विवेकसखीसुं
होय रचे
स्त्रभाग्याधिकस्या। चतुष्पत्सुखं संचयं येस्वं चवैयाति। क्रियाविफाला जाय
कलेसउपजइ ॥क्रियाक॰ क्रियाति: फलजाये आलसैं करी ३ ॥तृतीयेक॰ त्रीजेस्थवनेंसूर्यपम्हो
तजायवाथि। क्रियानिफलाजानु रालस्यहेतो ॥३॥ तृतीयेयदाहर्मणि
होयतो नसमयनें ॥प्रतापाधिकंक॰ प्रताप अधिक पराक्रमनें विस्तारे ॥तदाक॰ नाई संसंताप पामइ परदेस फिरे
विवइ
जन्मकालेतदा। प्रतापाधिकं विक्रमं वातनोति। तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थे १

तिर्वे सदाक· वैरीनोनासकरे, संग्रामेमांये राजाथी सु ४ ॥ तुरीयोक· सर्यस्थानकवनेंदायतोसोनोकाधिकपामइ

चारी। सदारिक्षयः संगरे संनरेंद्रात्॥४॥ तुरीयो दिनेशोतिशोकाधिकारात्

जनः क· समाथी स्वजनथी नाईथी विग्रहहोयं ॥ प्रवासीक· देसविदेसनइ विषफिरतोरहइमान भंग ॥ कदाचिक: कदेपिण

जनः संत्यजेद्धि गृहं बंधुनापि। प्रवासी विपक्षाहवमानस्तुंगे। कदाचिन्नतद्धि

तेहनोचितसांतापलपामइ॥ ५ ॥ सुतः क· पांमइ स्कवनइ स्कर्यहोयतो वलीबेटीथी क्रयायाक· तीरलुमतीहोयमंत्रादिकनीवि संतापपामइ॥

तिमायातिचेद्र॥५॥ सुतस्थानगे दुर्वजापत्यपीडा कुसायामतिर्नोस्करोमं

द्यापामइ ॥ रतिक· परस्त्रीवंचनाकेरयस्कसंग्रहकरेरतारीस्त्री ॥ मृतिः कोढ हृदयरोग थीमरणपामइ ६

त्रवैद्यारतिर्वंचनेसंचो कोपिप्रमादि। मृतिः क्रोडरोगारिजाव्याधिनियाद्द

॥ रिपुः क· स्कर्यबहइहोयवैरीनोनासकरे ॥ तनोक· राजकुलथीमित्रथीधनपामइ॥ ॥ कुलेक· चोपथीसं

॥ रिपुः ध्वंसनं कारो यस्य षष्ठे। तनोतिव्ययं राजतो मित्रतोपि कुले मातु

लिपामइ मामानइं वलिहोलि ॥ प्रयाणेक· चालतापंथे अल्पजनथी विषादपामइ॥ ७ ॥ द्यूनायोक· स्कर्यसातमइं स्कवनैहोय उपजइ॥

रापतुष्यादतो वा। प्रयाणे निषादे विषादं करोति॥७॥ द्यूनायो जदा द्यून

तोजनथीस्कथनंपा ॥ स्त्रियाक· स्त्रीथीपिंडथीचिंताकरीमिटानही ॥ स्येक· आपारमइंलाजघोफेउपजे मइ:

जातो जनस्य। स्त्रियानापनं पिंडपिंडाच चिंता। नवेत्तुष्ठलज्ञिसदाविक्र

॥प्रातक· परनीक्षदर्षः ईक्षागइनीडासषष्पनावम॥ ८ ॥क्रियाक· सर्युक्षाअमइसयतो क्रयास्ती एलंपटीसप्य कष्टनोसाजनहोय॥

येण प्रतिस्पर्द्धयानेति निद्रां कदाचित् ॥७॥ क्रियालंपटं चाष्टमे कष्टजातं वि

विदेसीक· परदेशनीस्त्रीपरणइ॥ परदेश नोव्यापारकरइ॥ ॥वस्तुक· चोरादिकथीधननोनाशकरइ होये धनजाइ सिघ्रकरी ॥विपक्षुक· गुहारे गतपजे

देसीयदारान्नजे वाप वस्तु। वसुक्षीणतो दस्युतो वा विलुब्धा। विपक्षुल्य जाता

आवमइसूर्यहोयतो ॥दिवाक· नवमइंसूर्यहोयतोहृष्पपरणाहोये॥ ॥नचाक· चित्तथीचिंताकदेनमिटे

न्तुरुषं तं चदन्ने ॥८॥ दिवानाथ कोऽदुष्टताकोणजाते। नचाप्नोति चिंतां वि

कदेनमिटइ॥ ॥तपःक· तपउपरधर्मउपरमनथेदपामइ नसूहोये॥ ॥क्रियाक· मोटीक्रियाआरंभेतिवारेसंताप पा

रामं वचेतः। तपं सुर्ययानिश्चयापि प्रयाति। क्रियालुंगतां सप्पते सोद

मइ॥ ॥प्रयातोक· जेहनैसूर्यदशमइहोयतोतेहनइंसकलवस्तुसंसर्णपामइ॥ तमःक· सर्वराजानोमन्यानहोय॥

रेण ॥९॥ प्रयातोऽस्मान्नजस्पमेषु रणेच्चा श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यः स्पृत

॥जनन्याक· मातानेजन्मवेलाइकष्टकारीहोयै॥ ॥क्रयविक्रि· क्रयविक्रयमांखेदपामइ वत्सजनकविंयोगइ॥ ११

स्य। जननस्या स्तप्यायात नो मांतनोति। क्रयः संक्रमे चक्षुन्नेवे विप्रयोगं ॥

॥रवौक· इग्यारमइंसूर्यहोयतोधनपामइ कष्टजपजइ ॥धिपःक· राजद्वारथ्यधीकारीपणोपामइ मुद्राधिकारी होवै॥

॥रवौ संत्रजेत्र स्वंचयस्तोऽपयाति। धिपश्चारतो राजमुद्राधिकारान् ॥ २

॥ प्रतापाक॰ अधीक प्रतापी होय वैरी ॥ स्त्रियोक॰ अनेक प्रकार जक्षी पामें बेठा १२ ॥ रविक॰ बारमइ
केइ वानयामइ ॥
मोक्षुखपामइ ॥
प्रतापानलेसन्नवः संतपंति। स्त्रियोनेकधाउः खमंगोद्भवानां ॥ व्यारविद्वेद
सर्व होइ ने नेत्र दुःख दुख पामे ॥ विपक्षाहवेक॰ वैरीथी जीतइ लडाई करतां ॥ क्षितिक॰ लांब घणी त्पइ शरीर पामा
से नेत्ररोगं च दोषं ॥ विपक्षाहवे जायते सो जयश्री ॥ क्षितिर्लं च या लीयते देह
होये ॥ पित्रक॰ कांकानइ पीडा करे हानि करइ १२ ॥ इति श्री रविफलं ॥ प्रथमं ॥ वपुक॰ मस्नीयो चंद्र
देहे। पित्रव्यापदो हानिरर्थप्रदेसे ॥ १२ ॥ इति श्री सूर्यफलं ॥ वपुस्थः शसी
निर्बलकरे वीर्य हीण करइ॰ विशेषेणक॰ कर्क राशि बीजी जो राशि विशेष
करइ
मंदवीर्यं विधत्ते। विसेषेणगो कर्कटतिक्रगो वा। सरीरं करुसंकर्क संभेषुय
॥ न्यगेक॰ न्याई होय पीलाइ बधो मोदेषइ ॥ १ ॥ हिमांक॰ चंद्रमा धन तुकनइ होय तो इंद्र नासु ॥ लनेक॰
परदेशइ ॥
तो। न्यगोन्यायत्तपुष्ट समायनेतु ॥ १ ॥ हिमांसोवसुस्थानगेवाम्लवंसा। क्रूमे
स्त्रीतणा श्रीलक्ष्मीजइ॰ अतीली जावंत होये ॥ कूटंबेक॰ स्त्रीपोकुटंब थी शीत वामी होय ॥ वसंक॰ नेपुरुषदेवा
दे च सौलोति लीलोन्यलीलः। कुटंबेरतिर्जायते तस्यतुष्टा। वसंदर्सनयां
गनानापलनो गनोगवे २ ॥ विषकंक॰ त्रीजइ चंद्रमा होये तपसी होय सीसे
वस्पदोइ ॥
साकरे
निदेवांगनापि ॥ २ ॥ विधुर्विक्रमे विक्रमेणेतिवित्तं। तपस्वीन्नवेद्भामिनिं

॥क्रियक॰ माईबीसुरीथीसुखपामइ ॥प्रतापक॰ निर्मलप्रसापीहोय धर्मनीध्वजाबांधइ ३

जितोपि। कियच्चिन्नयेत्सहजंसमंतस्य। प्रतापो ज्वलोधर्मिणोवैजयंत्या॥३

॥सुबंक॰ चोथेचंद्रमाहोइतौसुजनामातीमित्रबंधव ॥नपद्वारक॰ राजाक्षागइंअधीकारीहोय ॥वयक॰ प्रथमवयमांइवि
नइंसुखकारी

सुषंबंधुगा बांधवरा त्रिजन्मा। न्पद्वार सर्वाधिकारि सदैवा वयस्या। दिमे

वइसुखथोडोदेवे। ॥सुत्रक॰ सरवडीधकीतलीरीतेंसुखपवपजे ४ ॥यदाक॰ जोपांचमाथीचमइं

ताहृसं नैवसौषपं। सुत्तस्त्रिगणा तोषमाया। तिसम्यक ॥४॥ यदापंचमो यस्य

सुवनइंहोयतो ॥तेहनइसंतानकोसुखहोय निर्मलबुद्धिउपजइमति॰क॰ अनधनघीलाभ तथावी

नक्षत्रनाथो। ददेत्तस्य संतानसंतोषमेव। मति निर्मलामन्नलाभं च तुमेंउ

लाभ कृसीक॰ व्याजव्यापारथीलाभ लाभपामे ५ रिपोक॰ छठइभुवनइंचंद्रमाहोयतोसकदरवारी ॥जिताक॰
सकेंदरता होय

सीदेवता नाथयो। व्याच साया॥५॥ रिपौराजते विग्रहेणापि राजा। जिता

जेतासहुनइहोयतेतापलि
वेरीहोय ॥कफ॰क॰ कफरोगकरे जोचेधनक्षयकरइ ॥निश्चकरीजइली

स्तेपिन्नुवोरयः संभवंति। कफ व्याधयोलंचयालं व्ययेन। प्रियो वि

नोनाशकरइ वैरीनोनाशकरे ६ ॥ददेक॰ सातमइसुवनेंचंद्रमाप्रमोहोय तोस्त्री ॥धनिक॰ मार्गना
नोसुखहोय

भ्रमेत् सतुतोनोकदाचित्॥६॥ ददेद्दारसंसर्गमेसौ तरस्मि। धनित्वंन

व्यापारथी धनं वहोयै ॥ रतिक॰ स्त्रीनइं विषइ प्रेम होय प्रेम घणो कहे मिष्टान्न ॥ कुशोक॰ कृशपणैं जन्म होये
व्यापारथी लाभ होय सो जनक रह ॥ नो वेरी नतै जय उपजइ

वेदध्ववाणिज्यतोपि रतिः स्त्रीजने मिष्टभुक् कृशचेताः कृशांगः सुभगपदे

शरीर दुर्बल होय ॥ सप्तमक॰ आठमें तुवमैं चंद्र पड्यो होइ तो सदा वैरी रहे ॥ तजेतक॰ तेथजे करीक देक उपधनै

विपक्षादिजितिः ॥७॥ सप्ता विद्यते नैषजेन स्वगेहे त्यजेत् कहिंचित्

लेनो पुंगनो छायले ॥ महाआपदावंत धनव्यय घणो होय ॥ शुचिक॰ आठमें चंद्र पड्यो

छायमुद्गमौ कद्क्वानि महापद्य यासीत यो वारिक्ता शौची क्लेस

होयनो कलेस कारी होइ ॥८॥ तपोक॰ नवमें तुवनई चंद्रमा पड्यो होय तो प्रजाम धाज्ञास्लए वदे तेपु

संगटानष्टमस्थानगातपोन्नाबगस्तारके सो जनस्य प्रजाश्च द्विजाविं

कषनइं सर्वलोकस्यावइ ॥ नवत्सेवक॰ बालक आवस्था युवान अवस्थामें त्यागपणे सरीरक॰ सरीरइ सुषनित्यन

दितोपि सुवंति नवत्येवत्यागपादिको यौवनादे ससरिरे सुषच्चवड

होचंद्रमा नीपरइं ॥९॥ दवेक॰ दसमें तुवमें चंद्र पड्यो होइ तो धर्मिकमें थी बांधव थी तलावानां लोई समुद्रांक॰ समुद्रतोइं राजादिक

वत्साहजं च ॥९॥ जव बांधवं कर्म भगो धर्मकर्मा समुद्रांग जेसे नरे

वीसकपपामइ नधिक॰ नवी स्त्रीथी पुत्र्यानी पणो पामइ पुरो॰ प्रथम पीताको सुषघाको पामइ

नो दितोपि नवीनांगना वित्तमेचश्रियत्वे पुरो जातकं सोप्पमत्स्यं

अयानी ॥१०॥ लसेताक॰ इग्यारमेंतुवनेचंद्रपमोहोयतोजासपामें घनिष्टाक॰ अधिकारपणोवस्त्रादिकअभंकरीपा
मयाति॥१०॥लग्नेनाधिपादिंदुनालोभगेनाघनिष्टाधिकारांबराणिअम
मई ॥श्रियोक॰ स्त्रीलक्ष्मीघणीहोइषेरकरीउपजे क्रियाक॰ सुषीकीयाकरइ बेटीघीसुषपामइ
ण॥श्रियोथश्रियोतःपुरंविभ्रमंति॥क्रियावेदतिकन्यकावत्सुला
लाच ॥११॥ शशिक॰ बारमेंतुवनेचंद्रपमोहोयतोवेरीथीआपडवे चिंत्याक॰ मंगलीकनेकार्येधनव्ययघ्या
लाद्॥११॥शशिव्यादशोसत्रुभनेत्राति चिंता॥विचिंत्यासख्या व्ययोमं
य पित्रक॰ पितामित्रथीचिंतामांपेदउपजे विषादउपजें मचाक॰ खलुलेलुण्यायास्त्रियादिकसुषघोडुं
गलेन॥पित्रव्यादिमित्रादितोतविखादान्नचार्ग्नो तिकामंप्रियास्य
भवें ॥१२॥ इतिश्रीचंद्रफलं॥ ॥२॥ विलग्नेक॰ सुर्तियोमंगलपमोहोसतोमाकनीत्राकनीजा
हउद्धिजोहयीतयपामइ
प्रियंत्वी॥२॥इतिश्रीचंद्रफलं॥विलग्नेकुजेदंडलोहाग्निभीतिः॥ष
तपनक॰ तेहनइमाथवकेशकोईनहीहोइनाहुनीपरि अस्तिक॰ स्त्रीनेयंगलपरोसोनहोइकलत्रनें ॥
अकली
तपेन्मस्तकेकेसरीकिंद्वितियः प्रसुतिर्न्नवैदैकतिवाकलत्रो॥वि ४

विपाक०फल आपिवैरी थांउपसर्गदु ॥२॥ भवेक० बीजे तुम नें मंगलमयथा तेह नें स्त्री होवे तौ सुं संकष्ट गाक

पजे सुं स्वयमेव॥

पाके फलानां सदैवोपसर्गा ॥१॥ भवेतस्य किं विद्यमाने कुटंबे प्रभुर्मंगलारवे

जो जीवे तो मंगल जे स्नेन पयो॥ यथाक० जिम मर्कट गलै हार राषी न सकें। पुन:क० वलें वादे हास्यो साम

करै

यस्पलहे धेने किं। यथात्रायत्ते मर्कट: कंठहार:। पुन: सन्मुखो को भवे

दे षि न सकें॥२॥ कुतोक० वाकुवलकि हांथी। बाकु उपार्जी लक्ष्मि। सुतिक० जो बीजे मंगल पयो

किहांथी॥

पादम्लयन:॥२॥ कुतो बाकु बीजें कुतो बाकु लक्ष्मि। स्तृतियो भवेन्मंगले

कवे पुरषनें। सहोक० काई नें देह व्यथा उपजे रे ।तपक० तपकरि न सकें तपकरे तो हासी थाय

मानवानां। सहोत्थव्यथा भ्रणतेस्वैर्न तिषा। तपश्चर्यया नो पुन्हस्यंकथंस्या

॥३॥ यदिक० जो मंगल बीघे तु वनेयतो ततक० बीजाग्रहें कांई अनुमति कुटिलपणो कांई करे

त्॥३॥ यदि लग्नसुत: संभवे त्वर्थ नावे तत: किं ग्रहाःस्यातु कू भाजनानां॥

सुहृक० मित्रवर्ग थी कांई कउपजे रुपाक० दयाधर्म थी वस्य तु मी राजाथी पामइ ॥४॥

सुहृदवर्ग सौष्यं न किं चिद्विचित्रं। कृपावस्य तु मिंत्र नेन्तु मीपालात्॥४॥

कुजेक· मंगल पांचमे तनु पमो होय तो ज जातेचक· संतानन जिवे नराणीक· पापमति अधीकी

वरा ग्निबलु वत होइ

कुजेपंचमेजाठराग्निर्बलियावः जातंचजातंनिहंत्येकएवा नराणीमन स्पापमतिः

होइ स्थवंक· पोतेडु वठी परइ आवटइ ॥५॥ नतिष्टंतिक· बठे मंगलु होय तो वेरी ना समा

परकुल लिजाम

किविवेषि। स्वयंदुग्धवतप्पतेतैःसदैव॥५॥ नतिष्टंतिषष्ठेरयोगारकेण।

युधंक· समर्थीक होइ नगत्क्रमनाहडरी नहोइ मनिषीक· बुद्धिवंत होइ सुषी होइ वलिक· एकवार

मामा ने डुवराइ होइ

युधंगारिताःसंयुगेसक्तिमंतामनिषीसुषीमातुलेनापयातव। द्विलीयेषुवि

नजाइ बलिफेरी पामइ ॥६॥ पअनुक· पाणीग्रहणकरे तेहुनो आधार को नहीं द्युयाणेक· वार२पर ऐ

नेत्रजैतार्थयन्तरि॥६॥ अनुयारन्तूतेनपाणिग्रहेण। द्युयाणेनवाणिज्य

वार२परदेस जाए वार२ वेपार मुहुरक· वार२ कार्यसेत्स होइ स्पर्धा करइ प्रहारक· मंगल सातमे होय तो कुठुद

व्यापार करइ विक दा प्रहार करे ख्यो ने मारे

तोनोन्यवृत्ति। मुहुर्जगदःसाद्धिंनोमेदिनीजा। प्रहारादितःसप्तमेदपति

ते स्त्रीने अंगे सरीरे कांइ सलं कर विरंग निदानेक· आठमो मंगल होय तो। निदान पणे दुःखी तो

सुकरइ

श्रा॥७॥ हुतंतस्यकिंखेचरा। कुजतुरंगे। निदानेनचेदष्टमेतुमिसत्नु। ५

॥८॥ महो क० त्रिदोष मति

सखा किं न न्नमतेसत् कृतोपि प्रयत्नः कृतो न्नश्यति चोपसर्गैः ॥८॥ महोग्रा मतिर्ज्ञोप

ज्ञाप्य वा पूजे। तपा क० नव में जुवनें मंगल होवै। नवे क० वजो जाई न थासा लोन नाव॥ कृतो क० आ

आकू रो कू। तोप थ्यो कु वेतो।

वंतम होग्र। तपो ज्ञावगो मंगलं संकरोति। नवे चादिमः मालकः सोदरो वा। कृतो विक्र

पार करे पण बेह के तुझ लाज॥९॥ कुले क० तेहना कुल नें विषे मं कुली। जन क० इच्छा में मंगल पम्यो होवे

होवे।

कस्य ल कुलं

मः उच्छलान्नो विपाके॥९॥ कुले तस्य किं मंगलं मंगलोनो। जनः कुर्वंत मध्य ज्ञावेज

इच्छा फल। स्वतः क० ते पोताना मेले स्वतः सुकृट होवै। वरा क० गाढो सिंह कुर्बल तो पलि बे जे लान ॥१०॥

दें कव

द्दिस्यात्। स्वतः सिद्धि एवाच तं सीयतां सो। वरा कोपिकं ग्रीरवः किं द्विति यः॥१०॥

कुजः क० लाग्न जुवनें मंगल पम्यो कुवेतो। नवे क० जुवनें द्वा जुन कुवें॥ कुमुखितो पापि सन्तु। धनं क० धनें कराय

पीडा उपजावै॥ घडरख कुवे। हन कर।

कुजः पीडये ज्ञान गोपत्य सद्भूनः। नवेत्स न्मुखो डुमुखो षि पवता पातः। धनं वर्धते गोधं

गाये करी वाधे। सक्र क० गिस्तु न मता पी धन जाय चामी थी ध॥११॥ इथ्या क० वैरी तस्कर थी खोटी वात माये

न जाय॥ आवे॥

नैर्वा हनै र्वा। सकृ तुम ता चैव पै स्तु न्य कारात्॥११॥ इथ्या किं वदंति न यं दसु तो व।

॥ कृषिक॰ षेतीथी वेरीथी चिंतामाधिदुःख होइ कुलतातोक॰ समरषवालो होइ तो पलि लोह घात होइ कुजेक॰ वारमें मंगल होइ

कृषिश्च वैरि चिंता प्रति व्याधि दुःखं। कुलतातो पि वंदकाहिताः लोह घातं। कुजे व्याद सो व्ययस्य

यतो व्यय नाश करे ॥ ५२ ॥ इति श्री मंगल फलं॥ बुधेक॰ बुध मूर्त्ति थो होय तो बीजा गुरुजन ज्य वरिष्टक॰

गुरुजनों

नाशं करोति ॥ ५२ ॥ इति श्री भौमफलं ॥ ३ ॥ बुधो मूर्त्ति गो मार्गयये धर्मसरिष्टं। वरिष्ट।

मतिश्रेष्ट होइ नीरोग देहधारी होइ जनाक॰ लोक नें विषें सो मानस्मार वर्णरस वृश्चिक॰ तेह नो सुं करे नीरोग देहध

सत्तोहेतिसेवे: रीरहोइ

धियो वैषारी हत्तिसाजः जनाद्व्यचामिकरीनुतिदेहा। श्चिकित्सा विदो दुश्चि

रीहोइ धनेक॰ धन सुवर्ण बुधवर्णो होय तो धन वामवाल बात करे। सत्ताक॰ सत्ता नें विषें सो तेण्या सवेदनी करइ

सां त्नवंति॥ ५१॥ धने बुधिमान् बोधनेबाकु तेजाँस सासंगतो सास ते व्यास एवं

मयो क॰ कलवीद्दकु नी परिछिद्र रदातार होइ पंडितक॰ तोगी समरस मान जाणवो बणिक॰

। व्यवोदा रताक ल्पवृक्षः स्मृतबुधः। बुधे र्स प्यते सेगतः षट्पदोयं ॥ ५२ ॥ क

वणिक सुमित्रताइ क्रियामां धणी को इक सील नें धरइ वसित्वक॰ वसीतव्याइ ले वासि होइ विजितोक॰ विज

णिक मित्रता प्रण कृष्टतिसिन्नो। वसि त्वं दियाउर्वसानामुपेति। विजितो ६

यवंतहोवेंकेजोगीपाय ॥ तृतियेंकरजीजेबुधहोयतोघणापुरषपीवी॥३॥ चतुर्थेचोथेंबोपुस्थान
केस्म विविधपाय॥ धेरहे॥ कस्थ होवेतोमि
पितेगतजेसन्यसेवा। तृतियेतुजेरासितोज्ञे लतावत्॥३॥ चतुर्थेचरेचेद्रजय।
चक्रलोमि॥ विसेषा॰ विसेषप्रकाराजद्वारनोअधिका॥ नवेंकाकेतोलेषकहोयेवीजापुरषहुआ॥ यस
गलिषें
रुमंत्रे। विसेषाधिकरुद्रुमिनाथागएस्यु। नवेक्षत्रुकोलिष्यतेवातडकाजद॥
का॰तोहनीश्रीस्यावीजाकरेंपीतानो॥६॥ नवेद्यक॰तेहनीमतिधननीमतिउपजावणहार।बुधेकएफळकारीपांचमो
धनन रहे॥
सापरे:पेटकंनोधनंच॥६॥ नवेच्चस्यमेधार्थसपादयित्री।बुधेर्तएपतेपंच
बुधकरइ पापरंतकरइं कपटघणेकेलवे वयस्याक॰प्रथमनयनेंदीवेगर्भनिजीवे॥
मेरोहिएवा।कियविद्यतेकेतवंसाजिसारं।वयस्यादिमेतुत्रगन्नोनतिष्टेत्व
८ विरोधीक॰धनपीविरोधसत्रुनोउदयकरइ प्रबोधाक॰साकनोउपदेसमाहेशरीरइंवायवीकार बुधेक॰स
हाइ
॥५॥ विसेषोधनिनांविरोधोरिपुनां। प्रबोधोयतीनांचरोधोनीजोनां।बुधस
लेमार्गधनलाइ निर्धनीसुव्यापारकरइ रिपुक॰वैरीनोनाशकरइ बुधसातमेंतुवनहोय
धपयो व्यायहारोनीधीनां। रिपुध्वंसकृतसंनवेक्षतुनावे॥६॥सुतेसीनगस

नो स्त्री सुषधणो होइ विधतेक सोगकरता वीर्य वर्गिलो हवइ अनसेक जो चंद्रमा सुर्य स्निछान होयतो
सीता समान होइ
नस्त नमे संस्तुवसा॥ विधत्तेत थातु वीर्यं च जेगे॥ अनस्तंगत्तेहेमयद्दहसी सा॥ नेस
नसको तिक शंपदा अभिमानक रसो नसके सतक अष्टमो चंद्र जहायतो १०० शतवर्ष जवेतीक देशविदेसनेविषे
जीवे
कोतिनत् संपदामानक त्रे॥ ७॥ सनजीवीतरं भगेराजपुत्रे॥ जयेत हृदे संतरं विश्व
प्रसीद्द निधानक व्यापारथी तथा होइ॥ निधान राजाथी पामइ॥
सुवसुक बुद्धि घणी होइ स्त्रीथी कीरत होय वीतवाधे
बुधोक हिलन
ता स्तो॥ निधानं नृपाद्धि क्रियावाउजेते॥ सुवसु जवा कीरनात्मीतिमंत॥ ८॥ बुधोध
वमे बुध होय तो धर्मवंत बुद्धिवंत हाइ सवेक दीक्षा लेइ देशपरदेशे प्रसीद्ध थाइ॥
कुलो कहिता कुलनें विषे दीपकसमान सुर्यनी परि तेजवंत॥
र्मगोधर्मशीलोषधीमान्॥ नवेद्दीक्षतः स्वधुना स्तानकोवा॥ कुलोद्योतकःक्षत्तनुय
राजासमान
धनापाक धनापीक अधीक होइ सत्यमव ९
मितं कहिता थोरो नेलिपामें घणो उपार्जे पारि
क्षितिपाउता॥ धनापाधिको बाधको दुर्मुषाणं॥ ९॥ मितं संवदेन्न्यो मितं संलजेता॥
प्रसोद्धाक राजाथी अधीक धनापी होइ दुर्मुषने विशकरे
वीतानी चाकरी करे पुजनीक पणो पामइ
राजा नीत ह्राथीका राजानी भक्तिकरइ॥ ८॥
पै सादो दिवे कौरी की राजभक्तिः॥ पीतुर्कर्मणि प्रजनीयो विसेपात॥ बुधो संपदो ७

रथीसंपदापामइ जोलाभनुवेनेबुधनहोयतोलाभनपामे: चतुराइपतनही ।रिस

नीतिर्दस्तमाधिकारी॥१०॥विनालाभनवावस्थितेञ्जेशयानं।नला-जोनलाव

नवलरे ऊतक कन्यानेंविवाहदानकिंणथीहाइ ऊताक ब्राह्मणत्रिषारहितहोइ

एपमाद्र स्पमस्ति।ऊतः कन्यका वाहदानं च देयं।ऊतो-ऽसरास्य का।

किमइइलरस्नानबुरुइ ११ नचेक जोवारमेंजेइनेंबुधनहायतोजन्मकाइ कथक ब्राह्मणद्यवताकिमन

न्कान्वंति॥११॥नचेवार्द्धोयस्वशीतांशुजन्मा।कथंतन्महंस्मि

जे २१ श्लोक संग्राममेंविषरिणपो अकस्मात्जयपामे वरदक ब्रह्मणमुषछइजेतेहनोचंनारको

देवान्कजंती रणे वैरिणोनीतिमार्षांतिकस्मा।वारेदप्यकोवांसवःकै

वारनवूहे॥१२॥ गुरुत्वक गुरुत्वयविषगुणकारीगुरुत्वकर्मा सुबे

शेइमहत्वंद्दात

नुन्ह्यः॥१२॥इतिश्रीबुधफलं॥४॥गुरुत्वंगुणैर्लग्नगेदेवपुज्यः।सुबे

षीक बुसुकरीजेनाइस्वेस्कदरसरीरहोई नातिक नातिमार्गजाणिपरलोककीकोजाणेहोइपर वसुनीक

उत्ववीयहोइ लोकनातिविनत

षीसुषीदिव्यदेहोत्यवीर्यो।गतिज्ञोविनीपारलोकी।विचिंत्या।वसुनी

द्रव्य नो अमघरच संबलु पाणयी एजाइ   कविनेक काव्य विषमति नी मलिदं हमाय विषकर मुखेक मुख क्वचन्नु तो बाल मलिनोइ

ष्पयं शं बलेन व्रजंति ॥ २ ॥ कवि चेमतिर्दंभनेत्र त्वं रा कि । मुखे दोषकृत्त्वस ।

सोणकर्म निर्वृविषेरता वेलो   ऊरंवेक बीज सुवनेगुरूरोयलो कष्टथी द्रव्यथी प्रातिसइ   तथाक तथा न ही मनाविश्रामपावेयल

श्रमेणां तएव । कुटुंबे गुरौ कष्टतो द्रव्यतश्च । त्वत्पार्श्वेनै विश्रममेयन्व

चीपाणिकरइ ॥ देवीयोग्पनहीं जेहनेंत्रजो गुरूरोयतेहनें लघुताइ नो मुषपीलोनाइ   लघुक बीजा सुवननो द्रष्टस्पातिएगुणकर

तापि ॥ ३ ॥ देदेव स्पष्ट मुख्यकपुगो देवमनि । लघुनं लघीयान्मुखं सोढरे

रुतक मित्र सुकृत लघु त्रण कीधु गुणमाह मित्रताइ निरवहेनही   जलाटोपक सापविषभदर्शनोला नपाणिव्यल्पलोइ   यहक घ

एा कृतघ्नात्र वे । मित्रएणर्चेन मैत्रे । लला टोप दर्शनलाञ्जो ननत्वक्त्रा ॥ ४ ॥ गृहवी

रणाबारणथी सुणइघोनानीहोस गृहद्वारथी वेदध्वनिहितकारी सुणाबे चट्ट   तथाक तिमजसवानाकरणरे

रतः श्रुयते वाजिषे हेषा । गृहद्वारतो वेदघोषाहितवक्त्रा । तथा स्पर्द्धिनः ऊर्व

हार करे सेवा । चतुर्थेक० चोथे चतुर्वनें गुरु होवें तो अंतः ॥४॥ । विलासेक० पांचमें भुवनें गुरु होवें तो क्रीडा
करण संतापसमि ४ कर्वानी मति घणी होवे॥

ते पारीचर्यां । चतुर्थे गुरौ तसमंतर्गतिं च ॥४॥ विलासे मतिर्बुद्धिर्गेहे च पंचमे भ

जवेक० वाचक लेष करहो होवें सामर्थ्यक । निदानेक० निरंतर खेटा ऊतो जमीजप । फलोक० फलविषे
होवें राजवहोवें ।

वेदज्ञत्यका कल्प को लेषको वा ॥ निदाने श्रुते विद्यमाने विद्युति । फलोपद्रवः प

उपद्रवहोवें कालने ॥५॥ रुजानौंक० रों गहोवें तो रोगरहित थाई । रिपौक० छठें गुरु होवें तो शत्रुनो न
विशेइ

क कालेफलस्य ॥५॥ रुजानौं जिनानां रुजः सप्तवेघुः । रिपौ वाक्यतो सत्रुहंत्री

त्रा करें । स्वक० पोतानि बुद्धिं काम करें विवाहनी । बलाक० बलथी भनगमावें मारयडे ॥६॥ मती
परेस्त्रीनाअदिवदीसे ।

त्वेमेति । स्वबुध्याचारें कर्म वैवाहिकं स्त्री ॥ बलाद्वर्षे कन्मातुलादेरनावः ॥६॥ मति

क० धणिमतिहोवें संपदा धणिहोवें । रतिक० स्त्रीनो सुष अत्यधणम होवें । गुरुक० सातमें गुरु होवें

सप्तस्य बुद्धि विद्युति स्तुब कीरति द्वैं नवेजामनीनां भवकी । गुरुर्गर्वे कच्चस्ययां

अहंकारी । सपीडाक॰ कामदेवनी पेरें मू ॥७॥ ।चिरंनोक॰ घणो काल बापनेघ। ।क्षितिक॰ घर
होवे॥ त्रिवंनहोवें॥ रेंरहें॥

मित्रेन्नावे।सपीडाधिकोदर्पकंदर्पस्व।।७।।चिरंनोवसैपैत्रकैचैवगेहे।स्थितिस्थावि

मां हेंपणि घणा दियस ।चिरंनोक॰ घणा दिवस शरीर। गुरुक॰ गुरु आवमें होवे तो वैकुंठ ॥८॥
नरहें॥ नीरोगरहें॥ जाई

नीनो।चिरंगेहमध्ये।चिरंनोभवेत्तस्यनीरोगमंगागुरुर्मर्त्युगोयस्यवैकुंठगंता।।९।।

चतुक॰ दृष्टिरें विषें आर षणा घर। पतिक॰ पुत्र जे होवें राजा राणीनें दि ।गुरुक॰ आतावीनीत होवेंनव
उंचा होवें॥ शक्तिनें विषेंघणो मान पामें स हे॥ मेंगुरुहोवें तो॥

चतुर्त्तुमिको वैनवेयस्य त्रेमी।पतिर्दक्षचेत्सवक्षजनानुमिदेवो।गुरुधर्मगावांधवो

मदाक॰ अहंकारचित्तमालसधर्मेंअवगणें॥९॥ध्वजांक॰ ध्वजानें मंम पेंकरी सोजा मानचि मी
त्रसाजोहोवें॥

वावीनीता।मदालसस्तोधर्मेवेगुनस्कारी॥१०॥ध्वजांमांक्रपेमेंदिरेंचित्रसातो।पि

तुःक॰ संपुर्णचंद्रथीअधिककांतिवानहोवें। अनुक॰ बेटानासुखथीअसंतोषीहोवें। ॥ पचेक॰ तेहनेघरेंअन्नना।

तुःपार्वणात्स्यतेजोधिकंचा।अनुष्टोनवेवर्मणाकुत्रकातो।पचेत्स्वहंत्रस्व ९

एकै

पातालमलारहे ॥२०॥ अध्यकूपंक• स्वर्णरूपादिधातुसर्वपामेंसस। वदंसक•केतजामुनिस्वरधीमंतकहेछै॥
सदिवदिसें॥

सामुद्रमन्त्रा॥१७॥अकूपंचलोऽसेगुरौ किंनलन्पु।वदंतास्टधीमेंतमन्सेमुनिंदा॥

पितुः क• पांचबेटाजारनाउचावलहारहोवें। परार्थेक•परनेकछेंसंपदावधारेरहवानेंनयी॥२१॥ यस्यःक• जेसचीसा

पीतुर्नीरस्वत्सुनवःपंचतस्यःपरार्थेनंदृथैनचेचेनवाय॥१॥यस्यांकीद्द

लाहोय धनव्ययकरेः अभिमानस्युं मति । ।कीदृसंक• मतिकिसानीपारकीवं विधिक•तेकीसिविधिजेऐंनाद्य
चनाकरें॥

संसद्युयेसाभिमाने"मति।कीदृसंवंचनेचस्परेषां।विधिःकीद्दसोर्धस्यः

करेंधननकवें त्रयःक एत्रीएपहोवेंबारमेंगुरुहोवेतेहनें ॥२२॥ इतिश्रीगुरुफलंद्वसर्यफल॥५॥ समी

नाशोहियेन।त्रयलङ्गबेवादशोजस्यजीवः॥२२॥इतिश्रीगुरुफलं॥५॥स

चीनक• नलोअंगहोवेसंगनलीहोवें समीचीनक• घलिस्त्रीसुंजोगनजोगवेसी समीचीनक• नाम्पवंतहोवें
लवूंतहोवें॥

मीचीनमंगंसमीचीनसंगं।समीचीनवकंगनाजोगसीलं।समीचीनकर्मासं

समन्वितहोवे।समीचीनकः लग्नाधिपस्तुकहोवेतो ॥२॥ सुषेकः सुषेमीठीवाणिहोवेंबुधी आदिहोवें ।सुषंकलत्साधिपस्तु

चलोसुषहोवें

मीचीनसमी र्मा।समीचीनस्तुकेन्द्रलग्नवर्त्ती॥२॥सुषेचारुवाग्मनीषीचचार्वी।सुखंचारु

ऋहोवेंसमीचीनहोवें ।कुटंबेकः धनसुवनेहोवेतो सर्वविस्यंसर्वजनवछल। कुटंबेकः कुटंबसुंकामसर्वाधिकारीहोवें होवेंसत॥

णीवासंासितस्य।कुटंबस्थितेपुर्वस्वस्यप्रज्ञे।कुटंबेनकिंचासचार्वंगिकं

॥२॥रतिस्त्रीकः स्त्रीनेंविसेषसुषनहोवेंपक्षेबंधव॥ गुरुकः गुरुदातावस्तुकहोवेतोगोदानघणाकरें। नवपुत्रोकः नोनासकरें।

म॥२॥रतिस्त्रीजनेतस्यनोबंधुनाशो।गुरुर्जस्यद्विचिक्यगोदानवांनोनवपुत्रे

पुत्रनेंसुषंसंपुर्णनथायसेना। पतिःकः दानदेतोसंग्रामकरतोकायरनथाय॥ ॥३॥ महवाकः महतचलोपा पतिहोवे॥ शालाकरतो॥

नवेत्सुत्रसोख्यनसेना।पतिःकोतरोदानसंग्रामसालान्॥३॥महच्चाधिकोय

मंत्रोयस्तुकहोवेतो ॥जनैःकः तेहहेनंतथापातानामाळसरुवातोकांई। क्रियाकः उवातोसुंजन्मचकिमातानो वधाईअधिकपामें सुष

स्यतुर्येसुरेज्यो।जनैःकिंनिजैश्चावरेरूपेतुष्टि।क्रियाहोषयेजन्मतःसुज १०

घणा। अधिक० अधिनैं दिधा जे टणा ते तो जस सं ॥४॥ सपुत्रेक० जो पांचमें शुक्र होवे तो सपुत्र होवे। प्रयासें
पूर्ण निरायु
नस्या॥ अधिनार्पितोपायनैरेव पूर्णः॥४॥ सपुत्रे पि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे। प्र
क० घरकि धणीकां ईक धन उपाजीई। ॥ उदर्केक० मंत्र अनें मीठें आहार कांइ जो आसागलि गु॥ मधिनेक० न
गन पाये।
यासेन किं यत्न संपादिता र्थाः। उदर्के विना मंत्रमिष्टासनास्या। मधीतेन किं
एपां किं सो गुण जे काव्य करि न जाणें॥५॥ सदेधेनक० छठें शुक्र होवे तो वैरी जाणें अमृतसुं बांधी सथाक० शत्रु थी उत्र
चोरहें॥
चित्र कवित्वेन सा किं॥५॥ सदैधेन शुक्रे सुधासिक्त शत्रु। र्व्यथा शत्रु गे
अपुष्ठ पिउल स्त्री डया जीय। ॥ विपद्देत क० जो फलो कार्य नीपजायो होय तो। वैरी विणास पामें मंत्री थी संताप पां
चो तरैंनो। नेरो सवे तां॥ विपद्देत संपादितं चापिकृत्यं। तप में जन्ततः ष्टु अपसो
में वके रानो ते ॥६॥ कलत्रेक० संतानें करी स्त्री रत्न गर्भा होवे ॥ कलत्रंक० कीमा अधिकी करे परदेशें पारि
सुषनही॥
श्रम ला करे स्त्री पुत्र घणा होवे सम
ष्पं न धत्ते॥६॥ कलत्रे वर स्त्री सुषं नो कलत्रा। कलत्रं उष्ण के स्त्रवेद नग

गर्न्ने । विलासाक० परदेशेंस्त्री सुं विलासकरे देशांतरमें । धीयाक० व्यासकरे तेथी मोहकुलकरे इस्सुं जाणीस्यें ॥७२॥
याकुरथमें
देशमें ॥
नो । विलासाधिकोगलपत चाप्रकासी । धीयालंकृतः केतमुस्यंतीकस्माद् ॥७२॥
जनकं० कुवचनबोलेकालघयोजीवे ॥ चतु:क० चतुपदनो सुषआपे शुक्रदे । जनोप्यक० वरसआठमें
जनकुवचवादिचौरंचान्नजीवी । चतुपदसुषंदैस्फुज्जो रददानं । जनोप्यष्टमेकष्ट
ऽवसाध्यकष्ट उपजे सं । पुन:क० घणामें सूतो धननें वधारियणाघणो ॥७३॥ कविक० शुक्र नवमें होवे तो कीणीनें धनन
सं
धननें
साध्योजयपर्धः । पुनर्वर्धतेदीयमानं धनर्लो ॥७४॥ कवीस्त्रित्रिकोणपुरेकेव=
आवे । कुसीक० देतो सर्वनें उधारो थेई ॥ पहंक० तिण घरें धन धर्मनी धजा देषीई । सहोक० पीता
नहीरे
णोर्णा कुसिद्देवद्येऽच्छिषमस्मेर्ददीरत्ना । पहंऽहंज्ञायतेन स्वधर्मध्वजादे: । सहोद्याद
भाईसु सन्मुष रहे सज्जन मित्रसुं ॥७५॥ भृगुकं० दसमें शुक्र होवे तो गोत्रि नो बलरो धरै । कृयाकं० भ्रमणपीधन
कोरहे ॥
रौसन्मुखः शुक्र एव ॥७५॥ भृगुकर्मगोत्रवीर्यं ... कृयार्थचमः किंन ११

धनदेयकरं ॥ ॥तुलाक॰ सर्वयो तानासरीषोलागें ई ॥ ॥ जनेक॰ घाणा पुरषजाणे मृल्लावस्त्रपुहस्या वि
वादनी परे दी सैं. दीस ॥१०॥

चात्मीय एव तुला मानतो नाणकीय व्यवहार निर्जनेरं वरैः प्रतरति किं विवादं ॥११॥

तपुत्रोक॰ शपारमें शुक्र होवे तो तेजवंत होवें । महत्वाक॰ मोटी बुद्धि होवें अनें धन कुंवोतो कोई ॥ तपुक॰ लग्न

॥ तपुत्रो दिते ज्वहिं नवीततेजो । महत्वा तदा किं च बुध्या समृध्या ॥ तनुलग्न

दाईकुवें शपारमें शुक्र होवें तो ॥ सरुपंक॰ सरुपकरे पृथ्वीपति करें जलापरें ॥ ॥१॥ कदाप्येक॰ किवारेंक

गो लग्नदो जन्मलग्नात् सरूपं महीपं च कुर्वीत समक्र ॥१॥ कदाप्येतिवं

वितकरइ सदा वितजाइ सितेक: बारमें शुक्र होइ तो लक्ष्मी तलीकरइ तद्वद्येक: अरु घ्राग लि वैरानि केजचाइ

दं विलियेन नित्यं । सितेकाद से केलि स कर्मकारी । तदेवेरयो निपन्नासुरी ज्ञो

प्रतापोक॰ प्रतापी होइ भामा मालातेरुवानलोई ॥१२॥ इति शुक्रफलं ॥ ६ कलौक॰ कलिजुगनें विषेजे

पाप्रतापो ज्वलो मार्तंडसानन्द्रकः ॥१२॥ इति श्री शुक्रफलं ॥६॥ कलौ जन्मलग्ने

हनेमुतियाज्ञानीहोइ   बलीक· तोतेहनें बलवीर्यकिहांथी॥   ॥विषक· विषद्दहि विषयाणीनी माधिपीनाउपजा

स्थितोनार्कं मुत्रो बलीतस्यवीर्यंकुतस्याधिकारा॥ विषद्दग्विषयंवारिस्तस्याधि

वे॥   ॥स्वयंक· पोतइं पंडितहोइ मछरीहोइ   ॥१॥   सुखाक· कष्टवेलीआपदाइ सुखरहितथाइ   कष्टं

स्याधा॥ स्वयंपण्डितोमत्सरीवैद्यएव॥१॥ सुखापेक्ष्यावर्जितोसौ॥ कष्टं बोत्वा॥ क

वधीलक्ष्मीकांइकोइलागवेसनीबीजेसुवनेहोइतो॥ समंक· सर्वथीमित्रथी अधीकेबोले॥   ॥घसन्नाक· घुसाडीवीना

ष्टं बन्दा नो वस्तु किंकिं न तु स्के॥ समत्व क्षि मित्रेणतिस्कं व्यसोपि॥ घुसन्नाद्विनाले

आरोनपामें॥ २   तृतीयेक· जेत्रीजे सनीहोइतोचित्तसंताप मोरहै॥   जनाक· जनउदय

ष्टकंकोलस्नेत॥२॥ तृतीयेशनौ येनकंच्यातिह्लसीतलंनेवचित्तंजनादुद्य

होइ  सुखस्वनताथे॥   ॥अविघ्नक· ताग मेंविप्रवहणउपजे॥   दृढाक· निश्चलमातीहोइ

माज्ञायेतसुखं ज्ञाषी॥ अविघ्नं जनके हि चित्तेव ताग्या॥ दृढा सेमुषीडु   १२

मूानीतोपालिङ्गनेण ॥३॥ चतुर्थेकं चोथोज्ञानिहोवेतोपीत्तानो । धनंकं बंधुवर्गनापरथी
पलोमुके धन घरवैगलोरहे

मुषसरव्रक्षतोपि॥३॥ चतुर्थेज्ञानोधेनकंयातिदूरं। धनंमंदिरंबंधुवर्गापवादं

जनेकं घरनैंविषेंरहोमाता। गृहेकं घरनीविवाहननि हानि करेंवायुरोग ॥४॥ ज्ञानोकं पंचमेज्ञान
पीतानेंसंतापउपजावें उपजे

जनैउश्च संतापकारी। गृहेवाहनैर्हानयो वायुरोगामृत॥४॥ ज्ञानोपंचमेच

होवेतोसंतानथीपु । चित्तकं चंचलबुद्धि अभिमानितत्त्रस्ति। । रतिकं विलापकरवानीमति
जाहेतपाडुपीहोवें रमतिहोवें। होयतेह

प्रजाहेतुदुखी। विचुतिश्चलानिश्च ज्ञातस्पबुद्धि। रतिर्देवयानेधर्मेशास्त्र

नीधर्मवि। कलिकं मित्रसुंकलेसकारीहोयह ॥५॥ रिपोकं छठेंशनिहोवेतोराजाथीतथाचोर
वयनहि दयरोगी॥ थीजयहोवे॥

नतवदा। कलिर्मित्रतोमंत्रतः कोमापीना॥५॥ रिपौराजतश्चोरतोजीतयकिंयद॥

यदाकं जोतेहनेपुत्रहोवेतोवैरी। बलाकं बलथीबुद्धिथीसंग्राम ॥ महिषाकं जेंसथीलाजहे
समानहोवे॥ मांजातीकोईसकें॥ ई

तस्यपुत्रोजवेदास्यशात्रौ। बलाबुद्धितकारणेत्यजेता। महिषादिज्ञामानितज्ञ

मा भोने हानि ॥६॥ नष्टारक० स्त्रितया मित्र थी रता ई न होवें। धुनेक० शानमे रानि होवे तो बेकुं । अम
होवे॥ कुषे रोगी या

न्मा तु डानां॥६॥ नष्टारा न राज्ये चिरं स्थाकु चित्तं। धुने मंदरोगो जं पति रोगरूपो। अ

तुक० कार्य नै विषै धुस्या हि तिन करें अम ऊतो क० वीर्य रहित करें। विक० उपरागी चोको उपी होवें॥७
बमा चित्त करें:

नु साहसा फलं स्यै टोंकबानैं चेतो। ऊतो वीर्यवान् विक लो लो लुपस्वाद ॥७॥

।वियोगो क० जननसु विजोग करें धनो विना॥ विनो सी धन ना करें आव मे रामी होवें करें तोए फल
श्री करें॥

वियोगो जनानां तु नोपा धिजानां॥ विना सो धनानं यथा यस्य नाशात्॥

शानिक० रोगी वोहोय वांकी हाहि होवे॥ नरपेक० ते भाग उक पट को एक रीसकें ॥८॥ श्री

शनि रं श्रुगो व्याधितः कुदर्शी तस्य गे जनः कैतवं कः करोति॥ ८ी

मत्तिक० मति तीषी होय ॥श्री ॥ रतिक० योगशा स्त्रना मुएमे अधिक मति। सु
आचार सील होय॥ करें॥

मतिस्तस्य तिक्षान तिकं तु सी लो रतिर्योगशास्त्रे सुतो राज कोपि॥ सु १३

हस्सुक० मित्र थी पुत्र थी सुषियो होवें दानपा[ल]। धर्मवान होवें लज्जावान् करवें सन्यासी थाई॥१॥ अ[थ]
लेवन में दानी करवें जोगी थाय॥

हस्सुश्चैतो ऽसुखितो दिनपालः॥ ३॥ निःधर्मगः स मेदकः सैन्यसेवा॥ १॥ अथ ६२

जात क० अलितेसेनें माता बाकनें हनें ॥ दृष्टि क० सर्वत्र पसीव करवें दुष्टां कों मनो ॥ ज्ञानैक० दरा में
पीता करवें॥ अधिकारी हुवें

जातस्य माता पिता बाकरेवा दृष्टि सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यं॥ ज्ञानै रेथ तेष्व

नी होवेनें ज्ञानी ॥ जयी क० तनमें जीतें जीवी अधिक करवे शरिन ॥२॥ स्थिर क० थिर चीत होवें आ
ज्ञानी वधे॥ जी बीपांमें नहा॥

मगेद्धर्ममंदे जयी विग्रहे जीव कोमाधिकारा॥२॥ स्थिरचित्तमा कुः स्थि

धुबो थिर करवें। स्थिरा क० रोग थिर न होवें बेरा थिर न रहे सतं॥ अपत्या क० पुत्र होवें नो अहंलटरा
मानथा रकवे राधा होवें सो सुलट होवें तो जीतेन

रं मानसं च॥ स्थिरा नैव रोगादि यो न स्थिराणि॥ अपत्यानि सुरः ज्ञातेरेक

कसकें धर्मचा क० अनेक प्रपंच उपजावें ज्ञानी इष्पा ॥१॥ विनष्टा क० विनीष्ट सी लहोयें अनेक दिन होवें
उतीनें रसें होयें तो

एवा प्रपंचाधिको ला लगेन्नानुपुत्रे॥१॥ विनष्टा सबै निष्ठुरो निस्वपोवा

॥सबेकूं तेज निबल होय शनी लग्नमें हो वें। पुत्रानो कलत्रमित्र बांधव घर बारे छुस्या जीनेन्त्र ॥ रिपुकूं बारमें हो
म दुःखी
।सबलग्न पो लग्नवर्ईयहेतु। वसन्तोब हितौ गुहेमंदनेत्रा। रिपुध्वंसक
वेंतो वैरी नो नाश करें सम ॥१२॥ इति शनिफलं। बारेसुवने फलं ॥१॥ स्ववाक्येक पोतानो वचनपाल
नरी पुग: पुंगरेवा॥१॥ इति श्री शनिफलं॥१॥ स्ववाक्यसमर्थो परे
वा समर्थ व्रतव्यंकरी॥ समाज्ञाक पोतानो यारको कार्ज साधैं॥ ॥राहू पहले हुवेनें॥ तमोकू राहू तेह
ढांके॥
षां व्रतापात्। समाज्ञा दयेत् साधयेत्। चापरावोत्। तमोजस्य
नें लग्नमें हो वें तेह नावयरी। कलत्रेंकू करुत्र धीमरण पांमें पीताने धंसघण॥२॥ राहू बेकू
नाजें सत॥ राहू वें॥
लग्ने सन्नभारि वर्गा। कल त्रे मति सुरिदारोपिययात्॥२॥ राहू बे
बीजें राहू होवे तो राहू बंने भमर॥ स्पुटाकू धनन हो वें चीरसी हनीय रिनि र्जय हू। स्वसर्गकू
राषे॥ वें
तमो मर्षि सुया राहू बा स्पुटा वागर्थ्य धा निर्जयो वित्त पा हा स्ववर्ग २५

पोतानावर्गनोनाशकरे॥ रवैंक॰षष्ठपुरषथीपरवसमाडें॥श्री॥ ॥२॥ नसीहोक॰ हस्तितथा
सस्त्रथीक्षयउपजें॥ जानीनसकें॥

प्राणासोन्नयंससस्त्रयाणोरवेसंलसेसावबस्यंस्वलेस्य:॥२॥नसिंहोननागाजु

सीघतथासर्प्पवा॥ अयातीक॰सीहसरीषाक्रुवेतीजेतु॥ इतियेन॰नीणजननीच्चाताकवें॥
लसमेंथीकहोवें वनेकुवेनासत्य॥

ना विक्रमेण॥ प्रयातीहसीहिंसुतेतस्यमत्र:॥ तृतीयेजगस्रोदरवेसमेति॥

प्रभ्राक॰प्रजावघणोक्रुवेंकेतुक्रुवेंतो॥३॥ चतुर्थेक॰चोपेस्थानकेंराहक्रुवेतोमाता॥ हृदिज्वाकें
नेसरीरेघणाहोवे॥
मीलागीक्रुवें॥

प्रजाबेपिनागपंक्रुतोयचकेतु॥३॥ चतुर्थेकघमाहनेरुज्यदहो॥ हृदिज्व

हृदामेंचिंताघणीक्रुवें॥ ॥सचेक॰राक्रुककेजोमेषनोष्ठनकारी ॥बुधेक॰कन्यामिथुन
सीतलमणोनपामें॥ कहो

लयासीतलेकिंनहिस्यात्॥ सचेदन्यथामेषगोकर्कगोसो॥ बुधेहेवगोजु

राशेंक्रुवेतोराहत्रा॥४॥ सुतेक॰जोपांचमेंराहक्रुवेतोबेटामरिमरीजाय॥ स्ततेक॰ष्वेटाचित्रकोताय
जूनानाइसरोषोक्रुवें

पतबधुस्वेद:॥४॥ सुतेसदसुतोत्सविक्रत्तसिंहकेयः॥ स्ततेजाधिनीचिंतः

समीटे बेटा दिसा। सतीक० हृदयरोग छते आहार संकरे। ॥प्रपंचेक० परपंचे करखा हिबते अदृष्ट होवे।
विकारहे॥
या चित्ततापः सति कोऽपरोगः किमाहारहेतुः प्रपंचेन किं प्राय कादृश्य वजे
॥५॥ बलेक० बलबुद्धिवीर्यधनसर्वे बेह नेवसि होये॥ ॥स्थितोक० वैरी जावबतेराहहोवेतो वैरी दूरिहो। स्थिक० वे
॥५॥ बलं बुद्धिवीर्यं धनं तत्व संचा। स्थितो वैरी सा वे पियेषां ज नानो। रिपु
वैरिनो अरणप समुद्रहोवे॥ स्थिरंक० थिर चित्तहोवे मामा कान्ती चिरन। ॥६॥ विनाशंक० सा होवे॥
णाम रणं पदहे देकराकु। स्थिरं मान समाजुलानो पिटया ॥६॥ विनाशं चर
तमेराहहोवेतो स्थितो नाशकरे रुजाक० गऊगुमनहोवेतो धातयादि रोगऊपजे॥ कटाक० कफाह जिम अगनि
त्सहमे चंद्रमुख रखा। रुजा धातु पाकादि नाचंद्रमाही। कटा हे यथा लोट्य
सुंलेमाय। निजोक० तिमजे उपायकरे तेनिफलथाय दूरि नयने। ॥७॥ नृपैक० राजा पंडित मान पोतानि
जातवेदा। निजो पायवादं दूरं कमं नोवयाति ॥७॥ नृपैः पंडितो बौद्धतो नि १५

मिंद्याकेरं सकृक॰ एकवार सापवान होयवंसनें निषेध्याग्य रहित करइ धनंक॰ व्यापार नो धन पासे न रहइ श्रमक॰ जो श्राठ

दितं स्वे। सकृत्प्राप्य लोके सकृद्वंसयेवा। धनं जानकं तज्ञानाश्चव त्यजेतिः श्रमयुंघि

में सह होय तो श्रषिल रोगभपजइ नवमें रोग होय श्रंगीकार करयो व्रत न लाजइ त्यजेक॰ नाइ नि को मे ऊर थी प्रेम घणो

संक्रं रंध्रगे स्वर्गमाने॥ ध्यातमे गीकृतं तत्यजेत्तत्व्रतादि। त्यजेत सादराज्जेन रं।

राषे रतिक॰ नवमें रोग होय तो कोढ की पुरष होय सयानोक॰ सुषें सुप्रतिज्ञ गोडे प्रति बोध देइ

श्रुप्रिया वा तू रतिः कौढकेजस्य चर्विंचि कोल। सयानो सुषंवदेनो बोधयंति।

मतिक॰ मननो श्रम केरे श्रय करे षतापी होइ जनक॰ लोकजन सुषी होइ रहे सकष सुयेन हो सुहृक॰ मित्रने दुषें दुषी

॥२॥ मतिश्रीमद्वैभयस्य षतापे। जनः व्याकुलो सौ सुषं नाति त्रोने। सुहृद्दुस्वदु

षी होय सो सन पावइ पुनःक॰ केतजो होय तो क्रूरकर्म नो करणहार ऊसेक॰ वचन थी धन पामइ श्राकर वाइ

षीजलेसीलवां। पुनः केतुके जस्य सक्रूरकर्मा॥१०॥ ल नेत्राकन्तार्थे चोरेक्षि

॥ बूजेक॰ परदेस कि ज्ञानें जाइ वेगो धन पामें॥ परार्थिक॰

करेण॥ बूजेत्किं विदेशे लसे तोप विष्टः॥ परार्थानितर्थान्हरे धूर्त्तएवः॥ प्रजा स

प्रजाक॰ प्रजा सर्वशत्रु: प्रजा था लाभ ॥११॥ तमोकरराकु बार में होवे तो विग्रहे मीत्र घरें प्रयासक॰ नर्थे

त्रवः स्युस्तमो लाभ सगश्चेत॥११॥ तमो वादरो विग्रहः संग्रहो पि प्रयासः कृ

अनर्थ मान लाभ उपजें नलाभोक॰ नला कहो वेंस्त्री नीरू भाग्यानी विरामेक॰ मनवां छित

कुवे

तो नर्थतामातनो॥ पुत्तो नलाभोऽवेत्कामिनी यत्र रूपा॥ विरामे मनो वांछि

नीवहि कुवें ॥१२॥ इति श्रीराकुफलं ॥दी॥ यदालग्न॰ किं दुष्ट: केसकर्त्ता केसउप

तार्थस्य वृद्धि॥१२॥ इति श्रीराकुफलं॥ दी॥ यदालग्नगः केतुकः क्रौर्या क

गे॥ सरोगक॰ रोग रोगानो सयर हे मनेदलगीरी न मिटई कलत्राक॰ गोरु नो चीता मन उद्वेग ला न मिटई सरीरेक॰

र्त्ता॥ सरोगाद्वि रोगाद्भयं व्ययता च॥ कलत्रादिचिंता महोद्वेगता च॥ शरी

शरीरें बाधनमिरइं वायुविकार होइ   बीजे केतु होय तो धनमो नाश करे   कुटंबक: कुटंब

रेपि बाधा च्चघा मा कृतोपि ॥२॥ धने केतु वो धान्य नाशं धनं च कुटंबादि

थी विरोध राजा थी चीता उपजइ   मुखेक: मुखपीडा कट्टक साषा बोले   जन्मक: जन्मकालइं विषे

रोधं नृपाद्व्य चिंता मुखे रोग दृशा वृ कृतं नोति त्रोषि। यदा स्वगृहे सो

सुष नो नास करइं   शिखिक: केतु बीजे कुवने होय तो सुष नो नास करे बोलवो उके   धनेक: धन थी लाता मिले

प्य नाशं करोति ॥२॥ सिखिवंधुभवे को शत्रुनासं च वादं। धनं श्चापि लो

थी जय होइं   नवेस्क: बांधव नो नास करइ सदा न कुपीडा रहे   नयेक: नय उद्योग करि दिनमीरइ इनि

सं नयं मिवतोपि। नवेत् बंधुनाशं सदा बाकुपीडा। नयो द्वेग नामा न से

त्य समया काल   चउथेक: केतु चोथो होय तो माता ने सुष दे न उपजइ   रूहक: मिश्र वाधी तया स्वन्य थी नासपामेइ

वेगताच ॥३॥ चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतोप्य स्यतोना।

मिथुनराशिनोकेतुउंडुकरीजेबंधहीनहोइ  चिरंजीवक चिरकालसदाउद्वेगनेपामइ

शमेति। शीघीबंधुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे। चिरंजीवकरोत्र सर्वदा व्यग्रताच

॥४॥ यदाक· जोपापग्रहेकेतहोयतोजन्मकालनेविषे · पोतानापेटमांवेदनाउपजेवावगत्धुषवातादिकष्टपामइ  सबु

॥४॥ यदापि चेत्पापस्य केतोश्च जन्म। स्वकीयोदरे घातवातादिकष्टं। स्वबु

द्धिक· थोडीबुद्धिहोइ अल्पसंतानहोइ  सदाक· लाजनेविषेसदाविलंबकारीहोइ  ॥५॥ तमक· केत

द्धिर्यथासंततिस्वल्पपुत्रा। सदा लाजनावे विलंबेचलाभः॥५॥ तमः वा

कुटेहोयतोसत्रुनोनासकरइ  मामाथीमानभंगहोइ  मानभंगउपजे  चतुक· चोप

यथ्यायष्टकेराहुस्तु नाशं। नवेन्मातुलात्यक्त्वा तो मानभंगः। चतुष्पु

दाथीसदासर्वदासुखघोडापावे  नीरोगक· शरीरविषेनहोइ तथाते विषेरोगउपजेनहइ॥ शिषीक· केतसातमेहो

द सुखं सर्वदा तुष्टमेवः। नीरोगश्च देहे गदालोचनादि॥६॥ शिखीसप्तमे  १७

यतोमार्गतेंउद्वेगउपजें। कलत्रावक॰स्त्रीनेंपीडातथाव्ययनाम्नाहोयें। निद्रेति॰कर्कमिथुनकमाएराशिहो
यतोवारिवृश्चिकस्थ॥
मार्गतोद्वेगताचाकलत्राद्दिपीडाव्ययव्ययनाचा।निद्रेति॰वृश्चिकनाशोयवाथा
जोभयउ। यदाक॰सदालग्नकारिहोवेजोसातमेकेतुहो।७॥गदेक॰गुदापीडावातपीडादिषोतोरोगउपजें।।
पजेसत्यं
रिन्नीतिःयदाकीटगःसर्वदाजानकारी॥७॥गदैःपीडितोवादितोदुष्टरोधि
यदाक॰जोकर्कनमामिथुननहोवेतोकेतुदाया।नवेत॰भ्रातमित्रायुगाहोयतोद्वायाकरेंस्खुपदें॥अजेकहतं
स्त्रीवृर्केवे करें॥
यदाकीटकेकन्यकागेयुग्मगेहाभवेत्तस्यभगोराकुलगोद्वायायाचा।अजेः
अजामेंगायपावाहमामेंजानकारा॥८॥यदाक॰जोधर्मकुवननोकेतुकुवेतोकष्टनाजें। सुताथी॰पुत्र
कस्या
गोपिजातेसुतार्थीचलाभः॥९॥यदाधर्मगोकेतवःकष्टनाजं।सुतार्थीनव
पीतथाम्लेछथीनाणपखुले।सहोक॰नवमेंचुवनसंघातेंबाकुरोगउपजें॥तपोक॰तपदानथीहानिपामेंसत्यं
लुछ्तोनाणपहानि।सहोक्रप्यघाबाकुरोगविधत्ते।तपोदानतोल्यासहानि

करेइं ॥९॥ पितुकं पीताको सुष न होवें केतु कर्म नु न ॥ स्वयं दुकं पोतें मान नाश करें ॥ ञ्हदि
नेत्रोने
करोति॥९॥ पितुर्नो सुषं कर्मणो यस्य केतु। स्वयं दुर्लगं मान नाशं करोति। ह्रदि
ह्रदेनें विषें गोठाने विषं पीड़ा होवें। जदाकं केतु सर्व दा लाभ का रिक हो ॥ ज्ञेलो॥ ॥१०॥ सुज्ञापक
वाहि नीपीड्यते जानुरेव। जदा केतव: सर्वदा लाभ सकारी॥१०॥ सुज्ञाप
ज्ञापवंत विद्यावंत दर्शन देषवाजोग्य। सुगात्रा कं शरीर रूमाने वें रुओं वा कोल लागें सवी॥ दरेकं उदरें पी
नननें।
:सु विद्याधिको दर्शनीय। सुगात्रा सुवेजा अधुव स्त्रापियस्यो। दरेपी ड्यते
अंगे दुष्ट होवें॥ ।सिषिलाकं लाजचु वनें अन्न कीरी कहो ॥११॥ सिषिकं बारमें केतु होवें तो
संततिर्दुर्नगश्च। शिखिलाभग: सर्वलाभं करोति॥११॥ दीर्घरी पुः गोक
कांन नेत्र पीड़ाकारि ॥ स्वयंकं पोतें राजा बराबर धनवंत होवें। रियोकं वैरि नो नाश करें कोतिवं
कहो
तद्दुरयकालो
र्ण नेत्रे च पीड़ा। स्वयं राजतुल्यो अयं शत्रु करोति। रीपो नाशनं मातुलैनं २६

कालोक्कैवं ॥ गोदकण्गुदाइंपीनागुदेपुपीनासदारहे ॥१२॥ इतिश्रीकेतुफलं ॥ ९ ॥ इतिश्रीचमत्का

वशार्मः गदेपीम्पुतेवस्तिगुदौसदेव ॥ १२ ॥ इतिश्रीकेतुफलं ॥ ९ ॥ इतिश्री
रचिंतामणिग्रंथसंपुर्णं ॥ लीषतंपंश्रीलब्धिविनयगणि वाचेजीणानें श्रीजिनायनमः श्रीसिवायनमः

चमत्कारचिंतामणिसंपुर्णं ॥ २ ॥ सकलवाचकचक्रचक्रोमममहोपाध्याय
श्री २० श्रीनावविजयगणितसिष्यसकलपंडितोत्तमपंडितश्री ९ श्रीना
यपविजयगणितत्सिष्यपायरजरेणुसेवकलब्धिविजयलिखतमिदं
पुस्तकंजेवाचेतेहनेंश्री जिनायनमः संवत् ७७ वर्षेमासफाल्गुणसुदि ७
मंगलैः सुश्री चमत्कराम श्वेराजथीराजरावजाश्रीजि सरुपजीराज्ये श्री
मस्तुस्थेतयनेत्रयंकृतनुजेः श्वंश्चेत्रयं वारिणः चेमेसख्यां बुधे विषत्रयं म
सुस्थियसरिगुरोः गुकेश्वानरमृतिः मृतीजन्मे मंदंचराकंदुमातो केसोनीवज
नानमतिमातियहेः सर्वैग्रहानंदिनः ॥ ॥ एयरमस्तुनवेनेमाठाजाणवा ॥ २९

जैनये

ताजककौस्तुभनोपुस्तक
गुरुजीनाघरछे. खवान
पारासरीदीदीछे
अपरनोपेओकांडदीदीछे
तीनीबोथिउनाघरछे

चमत्कारचिन्तामणी
१८८१

~~133.6~~

1376. MS.

442

C